डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, ललितपुर-झाँसी के प्रसिद्ध एडवोकेट श्री अभिनंदन कुमारजी टड़ैया के सुपुत्र श्री अविनाशकुमार टड़ैया की धर्मपत्नी एवं प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल की ज्येष्ठ पुत्री हैं। आपका जन्म अशोकनगर (मध्य प्रदेश) में ३० जनवरी १९५८ को हुआ। आपने बी.ए.(ऑनर्स) संस्कृत में स्वर्णपदक प्राप्त किया। एम.ए. में लघु शोध में व पी.एच.डी. में शोध - प्रबंध में भी आपने जैनाचार्यों एवं उनकी कृतियों को ही अपनी शोध-खोज का विषय बनाया है।

आध्यात्मिक वातावरण एवं धार्मिक संस्कारों में पलीपुसी डॉ. शुद्धत्मप्रभा निरंतर अध्ययनशील रही हैं। सम्प्रति वह अपने परिवार के साथ मुंबई में रहती हैं। जहाँ आपके पति का हीरे-जवाहरात एवं जड़ित आभूषणों का व्यवसाय है। मुंबई में आप अवैतनिक रूप से आध्यात्मिक कक्षाओं एवं समाजिक शिक्षण - प्रशिक्षण शिविरों व धार्मिक कार्यक्रमों का संचालन करती ही हैं। जैन जागृति एवं धर्म के प्रचार - प्रसार में आपका सराहनीय योगदान हमेशा रहता है।पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा संचालित शिक्षण - प्रशिक्षण शिविरों में भी आपका सदा योगदान रहता है। विगत तीन वर्षों से वे बालकक्षाओं का भी सफल संचालन कर रही हैं।

धार्मिक एवं साहित्यिक अभिरूचि आपकी पैतृक संपदा है। अतः गृहस्थी के जंजाल एवं सामाजिक गतिविधियों से भी कुछ न कुछ समय निकालकर अध्ययन - मनन एवं लेखन से नवीन सृजन में व्यस्त रहती हैं। जैन पुराण के आधार पर लिखी गई **राम कहानी** एवं युवा वर्ग में धार्मिक संस्कार देने की दृष्टि से पत्र शैली में लिखी **विचार के पत्र विकार के नाम** कृति इसी अभिरुचि का परिणाम है। बाल मनोविज्ञान व बाल मनोभावों को समझते हुए उनके सरल मन को धार्मिक ज्ञान देने के लिए आधुनिक शैली में लिखी गई **जैन नर्सरी, जैन के.जी. भाग १, २ और ३** बालकों को लुभाने में अत्यंत सफल रही हैं।

प्रमाणज्ञान

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

प्रथम संस्करण : २ हजार
११ अगस्त, २००४

प्राप्ति स्थान :
A-१७०४, गुरुकुल टॉवर,
जे. एस. रोड, दहिसर (पश्चिम)
मुम्बई-४०० ०६८.
फोन नं. : (०२२) ५५९५ ०७२३

मूल्य : Rs. 5/-

लेखिका की अन्य कृतियाँ

१) जैन नर्सरी (हिंदी, गुजराती, मराठी और अंग्रेजी)
२) जैन के. जी. भाग-१
३) जैन के. जी. भाग-२
४) जैन के. जी. भाग-३
५) चलो पाठशाला : चलो सिनेमा - भाग - १ (नाटक)
६) मुक्ति की युक्ति
७) विचार के पत्र विकार के नाम
८) जैनदर्शनसार
९) राम कहानी
१०) आ. कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार (शोधप्रबंध)
११) आ. अमृतचंद और उनका पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय (लघुशोधनिबंध)

प्रमाणज्ञान

लेखिका :
© डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया
बी.ए. ऑनर्स (स्वर्णपदक प्राप्त)
एम.ए., पी.एच.डी.
मुंबई.

प्रकाशक :
आराध्य प्रकाशन
अहिंसा मंच,
दहीसर, मुंबई.

प्रकाशकीय

'प्रमाणज्ञान' आराध्य प्रकाशन, मुंबई की ओर से प्रकाशित नवीन कृति है। लेखिका ने इसमें परीक्षामुख और न्यायदीपिका के आधार पर प्रमाण का स्वरूप और भेद - प्रभेद को प्रथम खण्ड में संक्षेप में सरल भाषा में गुरु - शिष्य के संवाद के रूप में तथा द्वितीय खण्ड में प्रश्नोत्तर के रूप में प्रस्तुत कर न्याय जैसे दुरूह विषय को जनसामान्य से परिचित कराने का प्रयास किया है।

इसी पद्यमय संवाद शैली में लिखी 'मुक्ति की युक्ति' का प्रथम संस्करण अल्पावधि में समाप्त होना ही उसकी लोकप्रियता का प्रमाण है।

आपके द्वारा लिखित जैन नर्सरी, जैन के.जी. भाग - १, भाग - २, भाग - ३ भी बच्चों में काफी लोकप्रिय हो रही हैं।

कथा साहित्य की दृष्टि से लिखी राम कहानी ने तो अपार ख्याति अर्जित की ही है। यह अब तक २८ हजार की संख्या में जन - जन तक पहुंच चुकी है।

इस सरल - सुबोध कृति के लिए वे बधाई की पात्र हैं।

स्व. सेठ अभिनन्दन कुमारजी टड़ैया, एडव्होकेट ललितपुर, अपनी बहू लेखिका डॉ.शुद्धात्मप्रभा टड़ैया को जैन सिद्धान्तों के प्रकाशन, एवं प्रचार-प्रसार हेतु सतत प्रेरित एवं प्रोत्साहित करते रहे। अतः उनकी भावनानुरूप उनकी १० वीं पुण्यतिथी ११ अगस्त २००४ को इस पुस्तक को प्रकाशित कर हम सभी उन्हें सच्ची श्रद्धांजली अर्पित करते हैं।

प्रकाशन मंत्री,
श्री अविनाशकुमार टड़ैया
मो. : (0) 9821266980

प्रमाणज्ञान

गुरुजी : सम्यक् - ज्ञान प्रमाण कहलाता,
मिथ्याज्ञान प्रमाणाभास कहलाता।
प्रमाणज्ञान से पदार्थों का निर्णय होता,
प्रमाणाभास से पदार्थों का निर्णय नहीं होता।

सिद्धान्तः क्या लाभ होगा इससे हमें?
इनको क्यों जानें, हम?
हमें तो आप यह बताइए -
दुःख दूर हमारा कैसे हो?
सच्चा सुख हमें कैसे हो?

गुरुजी : प्रमाणज्ञान से अज्ञान दूर होता है,
उपादेय, हेय, ज्ञेय भी जाना जाता है।
उसी से सच्चा सुख मिलता है,
दुःख दूर उसी से होता है।

सिद्धान्तः प्रमाण किसे कहते हैं?
प्रमाणाभास क्या होता है?

गुरुजी : जिस से पदार्थों का सम्यक् निर्णय नहीं होता,
संशय, विपर्ययादि सहित है जो होता;
वह ज्ञान प्रमाणाभास कहलाता।
जिससे स्व- स्वरूप, पर- स्वरूप ज्ञान है होता,

स्व-पर पदार्थों का निर्णय भी होता;
ऐसा स्व-अपूर्वार्थ निश्चयात्मक,
सम्यक् - ज्ञान प्रमाण कहलाता।
क्योंकि, जैसे - दीपक स्व-पर प्रकाशक है,
वैसे ज्ञान भी स्व-पर प्रकाशक है।

सिद्धान्तः माना ज्ञान स्व-पर प्रकाशक है,
पर सदा स्व-पर निर्णायक कैसे है?

गुरुजी : 'मैं' का ज्ञान आत्मा को सदा है होता,
अतः,'मैं' द्वारा ज्ञान सदा अपने को जानता।
जैसे - मैं घडे को जानता हूँ,
इसमें 'मैं' द्वारा स्व को जाना जाता।
घडे द्वारा पर को जाना जाता,
सर्वत्र ही ऐसा निर्णय होता।

सिद्धान्तः मैं टी.वी. देखता हूँ,
मैं किताब पढता हूँ -
सभी में 'मैं' द्वारा स्व का निर्णय होता,
पर अपूर्वार्थ क्या कहलाता?

गुरुजी : पहले कभी हुआ नहीं,
जिसका निर्णय किसी ज्ञान से,
अपूर्वार्थ वह कहलाता,
प्रमाण से उसका निर्णय होता।

सिद्धान्तः यदि निर्णीत विषय में
पुनः शंकादि हो जाएँ,
तो उसे क्या कहते हैं?
उसका ज्ञान कैसे होता है?

गुरुजी : प्रमाण से जाना हुआ होने पर भी,
यदि उसमें पुनः शंकादि हो जाएँ;
तो भी वह अपूर्वार्थ ही कहलाता,
उसका निर्णय भी प्रमाण से ही होता।
उसको जानने वाला ज्ञान भी
प्रमाण स्वरूप ही है होता।
किन्तु ध्यान रहे -
जो ज्ञान किसी प्रमाण से
जाने हुए पदार्थ को जानता है,
वह प्रमाण नहीं होता है,
क्योंकि,
पदार्थ का निश्चय नहीं किया उसने,
मात्र निश्चित ही को जाना है उसने।

सिद्धान्तः समझ गया गुरुदेव! बात आप की!
अज्ञान दूर नहीं होता जिससे,
हेय, उपादेय, ज्ञेय ज्ञान नहीं होता जिससे;
वह प्रमाण नहीं होता है।
गुरुजी! यह तो मैं जानता हूँ कि, -
संशय तो दो तरफ ढुलता हुआ

निर्णयरहित, अनिश्चित ज्ञान है,
पर विपर्यय - अनध्यवसाय क्या है ?

गुरुजी : सही कहा तुमने सिध्दान्त।
विरुद्ध अनेक पक्षों का अवगाहन
करनेवाला ज्ञान संशय कहलाता!
विपरीत एक पक्ष का निर्णय
करनेवाला ज्ञान विपर्यय कहलाता।
अनिश्चित, सामान्य, विकल्परहित
ज्ञान अनध्यवसाय कहलाता।
जैसे - चलते समय पैर में स्पर्श हुए
पत्थर या तिनके में " कुछ है " समझना।
उक्त तीनों ज्ञान स्पष्ट नहीं, निर्मल नहीं,
ग्रहण किए विषय में यथार्थता उत्पन्न करते नहीं,
अतः प्रमाण नहीं।
किन्तु संशयादि रहित ज्ञान सर्वग्राही होता,
निश्चयात्मक होने से वही प्रमाण है होता।

सिद्धान्तः इसका मतलब यह हुआ गुरुजी !
अनध्यवसाय में जो ज्ञान होता,
उसे जानने की इच्छा नहीं होती ।
संशय की तरह नाना पक्षों का अवगाहन
यह नहीं करता,
ना ही विपर्यय की तरह विपरीत निर्णय ही करता।

'क्या है?' - यह जानने का विकल्प
इसमें नहीं होता,
'कुछ है' इतना मात्र वह है जानता।
और जो रस्सी को सांप समझता,
उसका यह उल्टा ज्ञान विपर्यय कहलाता।
इसप्रकार जो संशयादि रहित है होता,
वही निश्चयात्मक ज्ञान प्रमाण कहलाता।
वस्तुस्वरूप जाना जाता जिससे,
कितने भेद होते हैं इसके?

गुरुजी : प्रमाण के मूल भेद दो होते,
जिनको प्रत्यक्ष व परोक्ष कहते।
विशदज्ञान को प्रत्यक्ष कहते ,
अविशदज्ञान को परोक्ष कहते।

सिद्धान्तः विशद तो बड़े को कहते हैं,
पर यहाँ विशद किसे कहते हैं?

गुरुजी : जो अन्य ज्ञान की सहायता नहीं लेता ,
वह स्पष्ट निर्मल ज्ञान विशद कहलाता ।
विशद प्रत्यक्षज्ञान दो प्रकार का होता -
जो पारमार्थिक, सांव्यवहारिक कहलाता।

सिद्धान्तः गुरुजी !
जो सबको अपना विषय बनाता है,
ऐसा केवलज्ञान ही पारमार्थिक होता होगा।

और जो इंद्रिय, मन से जाना जाता है,
वह प्रत्यक्ष ही सांव्यवहारिक होता होगा।
क्योंकि परमार्थिक परम अर्थ बतलाता,
सांव्यवहारिक व्यवहारिकता बतलाता।

गुरुजी : बडे अधीर हो तुम सिद्धान्त!
बडे कमजोर हो तुम सिद्धान्त में।
अंदाज नहीं जगाया जाता सिद्धान्त में,
शास्त्रों से समझा जाता है सिध्दान्त।
बेटा!
पर से पूर्ण निरपेक्ष, आत्ममात्र सापेक्ष,
संपूर्ण स्पष्ट ज्ञान है पारमार्थिक प्रत्यक्ष।
पूर्ण निर्मल भी है यह होता,
यही मुख्य प्रत्यक्ष है होता।
यह निरावरण, अतीन्द्रिय भी है होता,
अतः अतीन्द्रिय ज्ञान भी कहलाता।
दो प्रकार का होता अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष
सकल प्रत्यक्ष और देशप्रत्यक्ष!
संपूर्ण द्रव्यों की समस्त पर्यायों को
जानता जो प्रत्यक्ष,
वह केवलज्ञान कहलाता सकलप्रत्यक्ष।
अवधि, मनःपर्यय ज्ञान हैं विकलप्रत्यक्ष,

क्योंकि ये दोनों ज्ञान भी हैं आत्मसापेक्ष।
अतः
इन दोनों ज्ञानों में भी होती पूर्ण निर्मलता,
अपने - अपने विषय में होती पूर्ण स्पष्टता;
अतः तीनों ज्ञान हैं पारमार्थिक।
बताओ क्या होता है पारमार्थिक?

सिद्धान्तः जो इन्द्रियों की सहायता से रहित होता,
आवरणरहित, आत्मसापेक्ष है होता।
अतः जो पूर्णतया विशद है होता,
वही पारमार्थिक प्रत्यक्ष है होता।
सकल - विकल भेद है दोनों में विषय अपेक्षा,
भेद नही हैं उनमें स्वरूप अपेक्षा।
पूर्ण निर्मलता होती तीनों ज्ञानों में एक समान।
परमार्थिकता की दृष्टि से तीनों हैं एक समान।

गुरुजी : जो इंद्रिय - मन की सहायता से है होता,
वह एकदेश स्पष्ट ज्ञान है होता।
इसके द्वारा प्रवृत्ति-निवृत्तिरूप व्यवहार चलता,
अतः यह सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष कहलाता।
थोडी निर्मलता सहित है होता,
अतः यह प्रत्यक्ष कहलाता।
वस्तुतः यह परोक्ष ही है होता,
क्योंकि यह आत्मा से सीधा नहीं होता।

सिद्धान्तः इसका मतलब यह हुआ गुरुजी।
लोक में जिसे कहते प्रत्यक्ष हैं,
जैनों में वह सांव्यवहारिक कहलाता है।
वस्तुतः तो वह परोक्ष ही है,
क्यों कि इंद्रिय - मन द्वारा होता है।
इंद्रिय प्रत्यक्ष इनको ही कहते होंगे।
इनके भी तो कुछ भेद होते होंगे?

गुरुजी : पाँचों इंद्रियाँ व मन की
चार - चार अवस्थाएँ होती हैं।
अवग्रह, ईहा, अवाय, धारणा
इन चारों के भी १२ - १२ भेद होते हैं।
इनमें जो इंद्रिय द्वारा उत्पन्न होते हैं,
वे इंद्रिय प्रत्यक्ष कहलाते हैं।
जो मन द्वारा उत्पन्न होते हैं,
वे अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष कहलाते हैं।

सिद्धान्तः गुरुदेव!
अब परोक्षज्ञान का स्वरूप बताइए,
उनके भेद - प्रभेद भी समझाइए।

गुरुजी : पर की सहायता चाहता है जो,
अपने स्वरूप की प्राप्ति में जो;
अविशदज्ञान होता है वो।
परोक्षज्ञान कहलाता है वो।

पूर्व प्रमाणों की आवश्यकता होती
जिस प्रमाण में,
स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान, आगम
शामिल परोक्ष में।
स्मृति में आवश्यकता होती प्रत्यक्ष की,
प्रत्यभिज्ञान में स्मृति व प्रत्यक्ष की।
तर्क में प्रत्यभिज्ञान, स्मृति व प्रत्यक्ष की,
अनुमान में तर्क प्रत्यभिज्ञान, स्मृति व प्रत्यक्ष की।
आगमज्ञान भी होता उक्त चारों पूर्वक,
इसप्रकार पाँचों प्रमाण होते पूर्व प्रमाणपूर्वक।

सिद्धान्तः पूर्व प्रत्यक्ष की याद को स्मृति कहते हैं।
पर प्रत्यभिज्ञान किसे कहते हैं?

गुरुजी : सही कहा सिद्धान्त तुमने।
पूर्व में अनुभूत विषय की ही स्मृति होती है,
स्मृति का विषय भूतकालीन होता है।
स्मरण धारणा रूप अनुभव का ही होता है,
अतः पूर्व प्रत्यक्ष स्मरण का निमित्त होता है।
अनुभव और स्मरण पूर्वक होनेवाले
जोड़रूप ज्ञान को प्रत्यभिज्ञान कहते हैं।
इसके चार भेद होते हैं -
'यह वही है' एकत्व कहलाता,

'यह उसके समान है' सादृश्य कहलाता।
'यह उससे विलक्षण है' वैलक्षण्य कहलाता।
'यह उसका प्रतियोगी है' प्रातियौगिक कहलाता।

सिद्धान्त- समझ गया गुरुदेव। प्रत्यभिज्ञान में,
स्मरण व प्रत्यक्ष की आवश्यकता होती
प्रत्यभिज्ञान में।
क्योंकि - वर्तमान का प्रत्यक्ष ओर पूर्व प्रत्यक्ष
स्मरण कारण जिसमें,
ऐसा मिला हुआ ज्ञान होता प्रत्यभिज्ञान में।
प्रत्यक्ष, स्मृति और प्रत्यभिज्ञान
तीनों होते तर्क में,
तर्क व अनुमान किसे कहते हैं? न्याय शास्त्रमें।

गुरुजी : व्याप्ति ज्ञान को तर्क कहते हैं।
साधन से साध्य के ज्ञान को अनुमान कहते हैं।
जो स्वयं ही जाने हुए साधन से,
साध्य को जाने वह स्वार्थानुमान कहलाता।
जो परोपदेश से जाने हुए साधन से
साध्य को जाने वह परार्थानुमान कहलाता।

सिद्धान्तः व्याप्ति किसे कहते हैं?
साधन - साध्य क्या होता है?

गुरुजी : साधन के होने पर साध्य के होने को,
तथा साध्य के न होने पर साधन के न होने को,

व्याप्ति कहते हैं,
तर्क से इसका निर्णय होता है।
जैसे - धूम के होने पर अग्नि का होना,
अग्नि के न होने पर धूम का न होना।
जो प्रत्यक्षादि प्रमाणों से अबाधित होता,
और वादी को इष्ट है होता,
असिद्ध भी है होता;
वह साध्य कहलाता।
साध्य से जिसका अविनाभाव होता,
वह साधन कहलाता।

सिद्धान्तः आगम तो शास्त्र ही है।
पर अविनाभाव क्या है?

गुरुजी : साध्य के बिना साधन का न होना,
अविनाभाव कहलाता।
जैसे - अग्नि के बिना धूम का न होना।
इसमें अग्नि साध्य, धूम साधन कहलाता,
इन दोनों का संबंध अविनाभाव कहलाता।
आप्त के वचन जिसमें निमित्त हैं,
ऐसे पदार्थों का ज्ञान आगम है।
आप्त किसे कहते हैं?

गुरुजी : जो प्रत्यक्षज्ञान से समस्त पदार्थों के ज्ञाता हैं,
हितोपदेशी, वीतरागी वे आप्त हैं।

सिद्धान्त: समझ गया प्रमाणस्वरूप मैं।
पूर्व प्रमाणों की आवश्यकता होती,
स्मृति आदि पाँचों परोक्ष प्रमाणों में।
पर्याय सहित द्रव्य विषय बनता प्रमाण का,
अकेली पर्याय या द्रव्य
विषय नहीं बनता प्रमाण का।
इसप्रकार
सामान्य - विशेषात्मक पदार्थ
विषय बनते प्रमाण के,
वस्तु के सर्वांग को ग्रहण किया जाता
प्रमाणों में।
वस्तु को सम्यक रूप में जाना जाता प्रमाणों से,
होता सच्चाज्ञान, सम्यक् - ज्ञान प्रमाणों से।
फलस्वरूप,
उपादेय, हेय, ज्ञेय रूप ज्ञान होता प्रमाणों से,
अज्ञान निवृत्ति होती प्रमाण ज्ञान से।

गुरुजी : सही समझे तुम प्रमाण स्वरूप,
हो तुम्हारा यह ज्ञान कल्याणरूप।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न १ प्रमाण किसे कहते हैं ?

उत्तर अपने स्वरूप और अर्पूवार्थ (पर पदार्थो के स्वरूप) का संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय रहित निर्णय करने वाले सम्यक् - ज्ञान को प्रमाण कहते हैं। प्रमाण सर्वग्राही होता है, निश्चयात्मक होता है।

प्रश्न २ ज्ञान का स्वभाव कैसा है ?

उत्तर ज्ञान स्वपरप्रकाशक है। जिसप्रकार दीपक पर पदार्थ के साथ - साथ स्वयं को भी प्रकाशित करता है, उसी प्रकार ज्ञान भी पर पदार्थ के साथ - साथ स्वयं को भी प्रकाशित करता है।

प्रश्न ३ ज्ञान सदा-स्व और पर का निर्णायक कैसे होता है ?

उत्तर 'मैं' का ज्ञान आत्मा को सदा होता रहता है। जैसे- मैं अपने द्वारा घड़े को जानता हूँ, मैं पुस्तक पढ़ता हूँ, मैं टी.वी. देखता हूँ आदि। इसमें 'मैं' और 'अपने द्वारा' पद से स्व का निश्चय होता है और घड़ा, पुस्तक टी.वी. पद से पर पदार्थ का बोध होता है। इसप्रकार ज्ञान से सदा स्व और पर का निर्णय होता रहता है।

प्रश्न ४ अपूर्वार्थ किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस पदार्थ का पहले कभी किसी प्रमाणज्ञान से निर्णय नहीं हुआ हो, उसे अपूर्वार्थ कहते हैं।

प्रश्न ५ **अपूर्वार्थ का निश्चय किससे होता है ?**

उत्तर प्रमाणज्ञान से।

प्रश्न ६ **जो ज्ञान किसी प्रमाण से जाने हुए पदार्थ को जानता है, क्या वह ज्ञान प्रमाण होता है ? नहीं तो क्यों ?**

उत्तर नहीं होता। क्योंकि उस ज्ञान ने पदार्थ का निश्चय नहीं किया है, मात्र जाने हुए को ही जाना है अतः वह प्रमाण नहीं है। प्रमाण तो पदार्थों का निर्णय करता है।

प्रश्न ७ **यदि प्रमाण से जाने हुए विषय में शंका हो जाए तो उसे क्या कहते हैं ? और उसका ज्ञान कैसे होता है ?**

उत्तर यदि प्रमाण से जाने हुए विषय में शंकादि हो जाएँ, तो उसे अपूवार्थ ही कहते हैं और उसका ज्ञान प्रमाण से ही होता है।

प्रश्न ८ **प्रमाणाभास किसे कहते हैं ?**

उत्तर जिससे पदार्थों का निर्णय नहीं होता ऐसे संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय सहित मिथ्या ज्ञान को प्रमाणाभास कहते हैं। इससे पदार्थों के सही स्वरूप का निर्णय नहीं होता है।

प्रश्न ९ **संशय किसे कहते हैं?**

उत्तर परस्पर विरुद्ध अनेक पक्षों का अवगाहन करनेवाले ज्ञान को संशय कहते हैं। यह दो तरफ ढुलता हुआ निर्णय रहित अनिश्चित ज्ञान है। जैसे - यह सीप है या चाँदी, रस्सी है या साँप।

प्रश्न १० **विपर्यय किसे कहते हैं ?**

उत्तर विपरीत एक पक्ष का निर्णय करनेवाले ज्ञान को विपर्यय कहते हैं। जैसे - रस्सी को साँप समझना। इसमें संशय की तरह अनेक पक्षों का विकल्प नहीं होता, अपितु विपरीत निर्णय होता है , उल्टा ज्ञान होता है।

प्रश्न ११ **अनध्यवसाय किसे कहते हैं?**

उत्तर अनिश्चित, सामान्य विकल्प (इच्छा) रहित ज्ञान को अनध्यवसाय कहते हैं। जैसे - चलते समय पैर में स्पर्श हुए पत्थर या तिनके में 'कुछ है' - ऐसा ज्ञान । अनध्यवसाय में जो ज्ञान होता है, उसे जानने के बारे में व्यक्ति की इच्छा नहीं होती है। इसमें 'क्या है' जानने का विकल्प नहीं उठता है। 'कुछ है' इतना ही वह जानता है।

प्रश्न १२ **संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय - ये तीनों ज्ञान प्रमाण क्यों नही है।**

उत्तर ये तीनों ज्ञान निर्मल नहीं है, स्पष्ट नहीं है और ग्रहण किए गए विषय में यथार्थता उत्पन्न नहीं करते, अतः प्रमाण नहीं है।

प्रश्न १४ **प्रमाण के कितने भेद होते हैं?**

उत्तर प्रमाण के मूल भेद २ होते हैं - प्रत्यक्ष और परोक्ष।

प्रश्न १५ **प्रत्यक्ष किसे कहते हैं?**

उत्तर विशदज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं।

प्रश्न १६ विशद किसे कहते हैं?

उत्तर दूसरे ज्ञान की सहायता के बिना होनेवाले पदार्थों के स्पष्ट, निर्मल ज्ञान को विशद कहते हैं।

प्रश्न १७ प्रत्यक्ष ज्ञान कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर प्रत्यक्ष ज्ञान दो प्रकार का होता है - पारमार्थिक और सांव्यवहारिक ।

प्रश्न १८ पारमार्थिक प्रत्यक्षज्ञान किसे कहते हैं? वह कितने प्रकार का होता है ?

उत्तर इन्द्रियों की सहायता से रहित, पर से पूर्ण निरपेक्ष, आत्ममात्रसापेक्ष, निर्मल, निरावरण, संपूर्ण स्पष्ट ज्ञानको पारमार्थिक प्रत्यक्ष ज्ञान कहते हैं। जैसे - केवलज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्ययज्ञान। इसे ही मुख्य प्रत्यक्ष कहते हैं। इन्द्रिय रहित होने से इसे ही अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है - सकलप्रत्यक्ष और देशप्रत्यक्ष

प्रश्न १९ सकलप्रत्यक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर समस्त द्रव्यों की समस्त पर्यायों को जाननेवाले ज्ञान को सकलप्रत्यक्ष कहते हैं। जैसे - केवलज्ञान।

प्रश्न २० विकलप्रत्यक्ष किसे कहते है ?

उत्तर द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा लिए हुए कुछ पदार्थों को विषय बनानेवाले ज्ञान को विकल प्रत्यक्ष कहते हैं। जैसे - अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान ।

प्रश्न २१ अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान तो एकदेश ज्ञान हैं? तो वे पारमार्थिक ज्ञान कैसे हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर आत्मसापेक्ष होने से दोनों ज्ञान भी पारमार्थिक हैं। केवलज्ञान की तरह ही इन दोनो ज्ञानों में भी पूर्ण निर्मलता होती है तथा अपने - अपने विषय में पूर्ण स्पष्टता होती है। अतः केवलज्ञान के समान अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान भी पारमार्थिक ज्ञान हैं। सकल और विकल - ये दो भेद विषय की अपेक्षा से हैं, स्वरूप की अपेक्षा नहीं ।

प्रश्न २२ सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर इन्द्रियाँ और मन की सहायता से होनेवाले एकदेश स्पष्ट ज्ञान को सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष कहते हैं। इससे प्रवृत्ति - निवृत्तिरूप व्यवहार चलता है, इसलिए इसे सांव्यवहारिक कहते हैं। जैसे - मतिज्ञान आत्मा से सीधा न होनेवाला तथा इन्द्रिय और मन की सहायता से होनेवाला यह ज्ञान वस्तुतः तो परोक्ष ही है । किन्तु थोडी निर्मलता सहित होने के कारण ही इसे प्रत्यक्ष कहा जाता है।

प्रश्न २३ इन्द्रिय प्रत्यक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर इन्द्रियों की सहायता से होनेवाले सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष को इन्द्रिय प्रत्यक्ष कहते हैं।

प्रश्न २४ अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर मन द्वारा होनेवाले सांव्यवहारिक प्रत्यक्ष को अनिन्द्रिय प्रत्यक्ष कहते हैं।

प्रश्न २५ अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर इन्द्रिय और मन की सहायता से रहित होने के कारण पारमार्थिक प्रत्यक्षज्ञान को अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष कहते हैं।

प्रश्न २६ परोक्षज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर अविशदज्ञान को परोक्षज्ञान कहते हैं। परोक्षज्ञान अन्य ज्ञानों की सहायता से होता है। परोक्ष प्रमाण में पूर्व प्रमाणों की आवश्यकता होती है। जैसे - स्मृति परोक्ष प्रमाण है, क्योंकि यह प्रत्यक्षपूर्वक होता है।

प्रश्न २७ परोक्ष ज्ञान के कितने भेद हैं?

उत्तर परोक्ष ज्ञान के पाँच भेद हैं - स्मृति, प्रत्यभिज्ञान, तर्क, अनुमान और आगम।

प्रश्न २८ स्मृति किसे कहते हैं?

उत्तर पूर्व प्रत्यक्ष की याद को स्मृति कहते हैं। अतः पूर्व प्रत्यक्ष स्मरण का निमित्त होता है। स्मृति का विषय भूतकालीन होता है । स्मरण धारणारूप अनुभव का ही होता है। जैसे - वह देवदत्त है। इसमें पहले जाना गया देवदत्त ही 'वह' शब्द के द्वारा जाना जाता है।

प्रश्न २९ प्रत्यभिज्ञान किसे कहते हैं?

उत्तर अनुभव और स्मरण पूर्वक होनेवाले जोड़रूप ज्ञान को प्रत्यभिज्ञान कहते हैं। इस ज्ञान में पूर्वप्रत्यक्ष का स्मरण और वर्तमान प्रत्यक्ष की आवश्यकता

होती है क्योंकि जिस पदार्थ को पहले देखा था, उसी को फिर देखकर 'यह वही है जिसको मैंने पहले देखा था' - ऐसा जो ज्ञान होता है उसी को प्रत्यभिज्ञान कहते हैं।

प्रश्न ३० प्रत्यभिज्ञान कितने प्रकार का होता है?

उत्तर प्रत्यभिज्ञान ४ प्रकार का होता है - एकत्व, सादृश्य, वैलक्षण्य और प्रातियौगिक

प्रश्न ३१ एकत्व - प्रत्यभिज्ञान का विषय क्या है?

उत्तर पूर्व और उत्तर अवस्थाओं में विद्यमान रहनेवाली एकता ही एकत्व - प्रत्यभिज्ञान का विषय है। जैसे - यह वही मोहन है।

प्रश्न ३२ सादृश्य - प्रत्यभिज्ञान का विषय क्या है?

उत्तर पूर्व अनुभव में आई वस्तु का, बाद में अनुभव में आई वस्तु से समानता बताना ही सादृश्य - प्रत्यभिज्ञान का विषय है। जैसे - यह मिठाई कल खाई मिठाई जैसी ही है।

प्रश्न ३३ वैलक्षण्य - प्रत्यभिज्ञान का विषय क्या है?

उत्तर पूर्व में अनुभव में आई वस्तु का बाद में अनुभव में आई वस्तु से विसदृशता बताना ही वैलक्षण्य - प्रत्यभिज्ञान का विषय है । जैसे - कल खाई मिठाई से इस नमकीन का स्वाद भिन्न ही है।

प्रश्न ३४ प्रातियौगिक - प्रत्यभिज्ञान का विषय क्या है?

उत्तर पूर्व अनुभूत वस्तु बाद में अनुभूत वस्तु की प्रतियोगी है - यह प्रातियौगिक - प्रत्यभिज्ञान का विषय है। जैसे - सीता को राम के पास देखकर यह ध्यान

आया कि लक्ष्मण की पत्नी उससे दूर है। इसमें किसी व्यक्ति को पास देखकर अन्य की दूरी ध्यान आई।

प्रश्न ३५ तर्क किसे कहते हैं?

उत्तर व्याप्ति ज्ञान को तर्क कहते हैं। यह प्रत्यक्ष, स्मृति और प्रत्यभिज्ञान पूर्वक ही होता है।

प्रश्न ३६ व्याप्ति किसे कहते हैं?

उत्तर साधनरूप वस्तु साध्यरूप वस्तु के होने पर ही होती है और साध्यरूप वस्तु के नहीं होने पर साधनरूप वस्तु नहीं होती - इस ज्ञान को व्याप्ति कहते हैं। जैसे - साधनरूप धूम साध्यरूप अग्नि के होने पर ही होता हैं और साध्यरूप अग्नि के न होने पर साधनरूप धूम नहीं होता है। तर्क से इसका निर्णय होता है।

प्रश्न ३७ साध्य किसे कहते हैं?

उत्तर जो वादी को इष्ट, अबाधित और असिद्ध होता है उसे साध्य कहते हैं।

प्रश्न ३८ साधन किसे कहते हैं?

उत्तर साध्य से जिसका अविनाभाव होता है, उसे साधन कहते हैं।

प्रश्न ३९ अविनाभाव किसे कहते हैं?

उत्तर साध्य के बिना साधन के न होने को अविनाभाव कहते हैं। जैसे - अग्नि के बिना धूम का न होना। इसमें अग्नि साध्य है और धूम साधन और इन दोनों के संबंध को अविनाभाव कहते हैं।

प्रश्न ४० अनुमान किसे कहते हैं? वह कितने प्रकार का होता है?

उत्तर साधन से साध्य के ज्ञान को अनुमान कहते हैं। वह दो प्रकार का होता है। स्वार्थानुमान और परार्थानुमान।

प्रश्न ४१ स्वार्थानुमान किसे कहते हैं?

उत्तर जो स्वयं ही जाने हुए साधन से साध्य को जानता है उसे स्वार्थानुमान कहते हैं। जैसे - यह पर्वत अग्निवाला है क्योंकि वहाँ धूम है।

प्रश्न ४२ परार्थानुमान किसे कहते हैं?

उत्तर जो परोपदेश से जाने हुए साधन से साध्य को जानता है उसे परार्थानुमान कहते हैं। जैसे - पर्वत अग्निवाला होना चाहिए क्योंकि धूमवाला है - ऐसा किसी के कहने पर किसी अन्य को पर्वत पर अग्नि का ज्ञान होना ही परार्थानुमान है।

प्रश्न ४३ आगम किसे कहते हैं?

उत्तर आप्त के वचन कारण हैं जिसमें, ऐसे पदार्थ के ज्ञान को आगम कहते हैं।

प्रश्न ४४ आप्त किसे कहते हैं?

उत्तर जो वीतरागी, सर्वज्ञ और हितोपदेशी हैं; उन्हें आप्त कहते हैं।

प्रश्न ४५ प्रमाणज्ञान से क्या लाभ है ?

उत्तर प्रमाणज्ञान से अज्ञान दूर होता है, वस्तु का सच्चा स्वरूप जाना जाता है। प्रमाणज्ञान से हेय, उपादेय, ज्ञेय की जानकारी होती है, जिससे दुःख दूर होकर सच्चा सुख प्राप्त होता है।

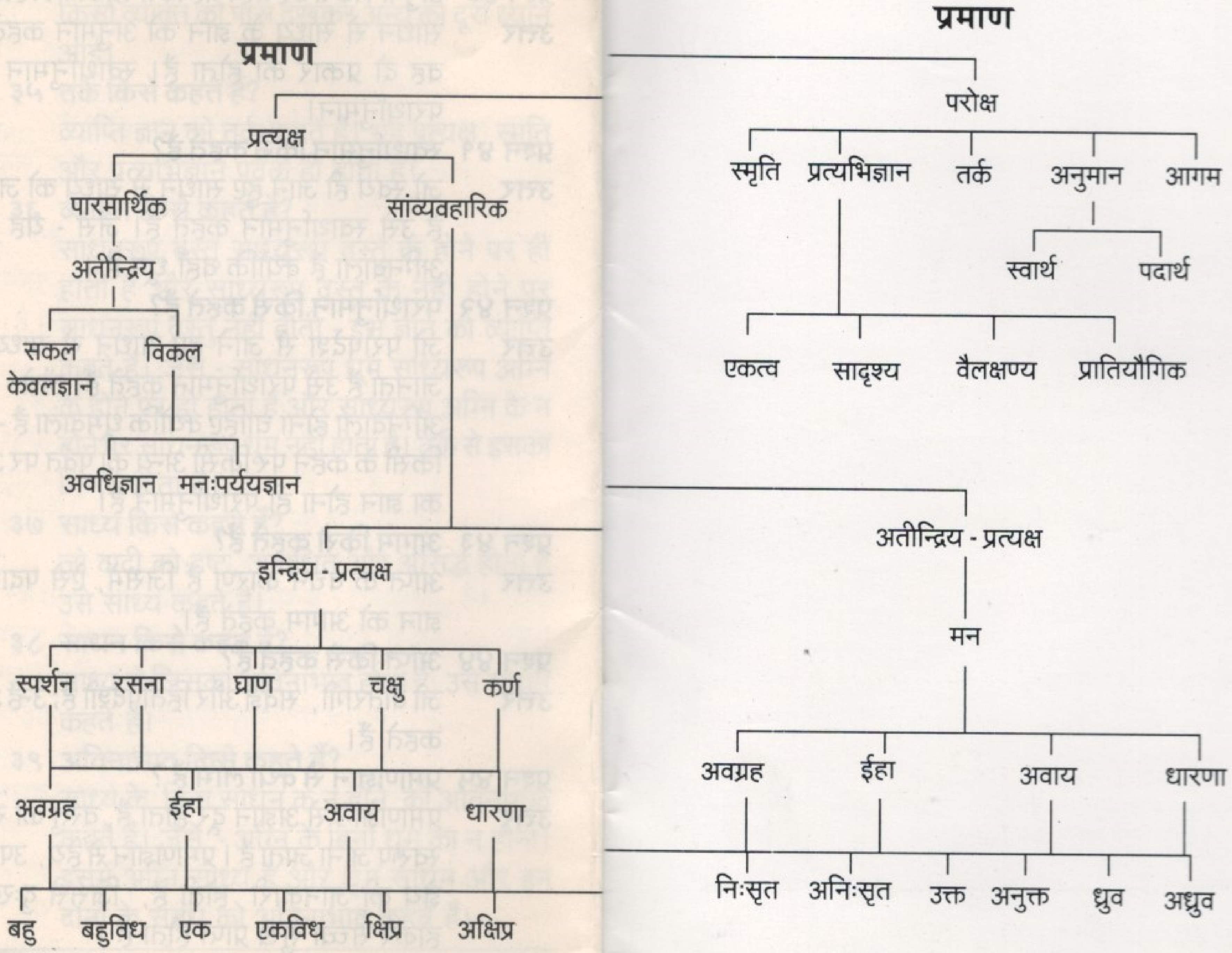
प्रमाण
प्रत्यक्ष
पारमार्थिक
सांव्यवहारिक
अतीन्द्रिय
सकल
विकल
केवलज्ञान
अवधिज्ञान
मनःपर्ययज्ञान
इन्द्रिय - प्रत्यक्ष
स्पर्शन
रसना
घ्राण
चक्षु
कर्ण
अवग्रह
ईहा
अवाय
धारणा
बहु
बहुविध
एक
एकविध
क्षिप्र
अक्षिप्र
प्रमाण
परोक्ष
स्मृति
प्रत्यभिज्ञान
तर्क
अनुमान
आगम
स्वार्थ
पदार्थ
एकत्व
सादृश्य
वैलक्षण्य
प्रातियौगिक
अतीन्द्रिय - प्रत्यक्ष
मन
अवग्रह
ईहा
अवाय
धारणा
निःसृत
अनिःसृत
उक्त
अनुक्त
ध्रुव
अध्रुव